प्राक्कथन

MR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
KOLHAPUR

प्राक्कथन

❑ प्रेरणा एवं विषय चयन -

हिंदी साहित्य में मेरी रूचि पहले से थी लेकिन एम्.ए. के अध्ययन के समय विशेष रूप से उपन्यास और कहानी विधा में यह रूचि बढ़ती गई। अध्ययन के दौरान 'प्रेमचंद' के 'गोदान', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'सेवासदन' और 'मान सरोवर के खण्ड' साथ ही यशपाल का 'झूठा-सच', भीष्म साहनी का 'तमस', 'झरोखे', रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूँ', नागार्जुन का 'बलचनमा', वृंदावनलाल वर्मा का 'मृगनयनी' आदि के साथ-साथ अज्ञेय का 'शेखर एक जीवनी' और हजारी प्रसाद द्विवेदी का 'बाणभट्ट की आत्मकथा' आदि उपन्यास पढ़ें। एम्.ए. के बाद उपन्यास की यह रूचि बढ़ती गई और फिर मोहन राकेश का 'अन्धेरे बन्द कमरे', अलका सरावगी का 'कलि-कथा : वाया बाइपास', मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम', 'विजन', जैनेंद्रकुमार का 'त्यागपत्र', उषा प्रियंवदा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें' तथा 'रूकोगी नहीं राधिका', कृष्णा सोबती के सभी उपन्यास, संजीव का 'जंगल जहाँ शुरू होता है', राजेंद्र यादव के 'सारा आकाश', 'शह और मात' आदि उपन्यासों को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हिंदी के समान मराठी उपन्यास में यह रूचि होने के कारण शिवाजी सावंत का 'मृत्युंजय', वि.स.खांडेकर का 'ययाति', पु.ल. देशपांडे के उपन्यास, साठे का 'फकिरा', देसाई का 'छावा' आदि उपन्यास पढ़े।

वैश्वीकरण के इस जमाने में भारत जैसे बहुभाषी, बहुसंस्कृतिवादी, खंडप्राय राष्ट्र के लिए तौलनिक साहित्य सच्चा वरदान है। इस दृष्टि को लेकर मैं श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के पास गई। उनसे विचार-विमर्श के बाद आगामी शतकों में किस प्रकार तौलनिक साहित्य और समकालीन संस्कृति की पढ़ाई केंद्रस्थल पर है यह बात उन्होंने समझायी। इसी दौरान डॉ. अर्जुन चव्हाण जी ने अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के यु.जी.सी. के मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट (''समकालीन हिंदी तथा मराठी के बृहत् उपन्यासों का वैचारिक पक्ष : तुलनात्मक विमर्श'') के अंतर्गत आनेवाले हिंदी तथा मराठी के सशक्त रचनाकारों को पढ़ने के लिए सुझाव दिया। प्रेरणा स्वरूप मैंने संजीव के 'सूत्रधार' तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर के 'महात्मा' को पढ़ा। उन दो उपन्यासों को पढ़ने के पश्चात् इन उपन्यासों के

चरित्रों से मैं प्रभावित हुई। दोनों उपन्यास के नायक विचारवंत के रूप में यहाँ प्रस्तुत हुए हैं। गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श के पश्चात् और सुझावों के अनुसार लघु शोध-प्रबंध के लिए ''चरित्रप्रधान उपन्यास 'सूत्रधार' और 'महात्मा' का तुलनात्मक मूल्यांकन'' विषय का चयन किया।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न खड़े हुए थे -

1. संजीव तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विशेषताएँ कौन-सी हैं?
2. 'सूत्रधार' तथा 'महात्मा' उपन्यास का मूल विषय क्या है?
3. विवेच्य उपन्यासों के प्रमुख चरित्रों की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?
4. दोनों के चरित्रों में कौन-सी समानता तथा विषमता है?
5. विवेच्य उपन्यासों के प्रमुख चरित्रों की कौन-सी प्रवृत्तियाँ हैं?
6. औपन्यासिक कला के आधार पर विवेच्य उपन्यास कैसे हैं?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात् मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध के विषय का विवेचन विश्लेषण किया है।

❑ लघु शोध-प्रबंध की सीमा और व्याप्ति -

हर शोध विषय की अपनी सीमा और व्याप्ति होती है। इसके सामंजस्य से ही शोध-कार्य सरलता से संपन्न हो पाता है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का विवेचन किया है -

✻ प्रथम अध्याय - ''उपन्यासकार संजीव तथा रवींद्र ठाकुर : तुलनात्मक विवेचन'' :

इस अध्याय के अंतर्गत संजीव और डॉ. रवींद्र ठाकुर के जीवन का विस्तृत परिचय दिया है। साथ ही दोनों के व्यक्तित्व के विशेष गुणों पर प्रकाश डाला है। दोनों के बहुआयामी रचना संसार का परिचय दिया है। दोनों को प्राप्त पुरस्कारों का परिचय, अध्याय के अंत में संजीव तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
KOLHAPUR.

विवेचन साथ में साम्य-वैषम्य को प्रस्तुत किया है। अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

*** द्वितीय अध्याय - ''सूत्रधार' तथा 'महात्मा' की विषयवस्तु : तुलनात्मक मूल्यांकन'' :**

इस अध्याय में संजीव का 'सूत्रधार' तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर का 'महात्मा' इन दो उपन्यासों की विषयवस्तु प्रस्तुत की है। उसके बाद 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का तुलनात्मक मूल्यांकन, साम्य और वैषम्य प्रस्तुत कर अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

*** तृतीय अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों में प्रधान चरित्र : तुलनात्मक मूल्यांकन'' :**

इस अध्याय में 'सूत्रधार' के भिखारी ठाकुर के चरित्र की विशेषताएँ, 'महात्मा' के महात्मा जोतिराव फुले के चरित्र की विशेषताएँ दी हैं। उसके बाद विवेच्य उपन्यासों के इन दो प्रधान चरित्रों का तुलनात्मक मूल्यांकन कर दिया है। दोनों का साम्य-वैषम्य और अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं ।

*** चतुर्थ अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों में चरित्र चित्रण की प्रवृत्तियाँ : तुलनात्मक मूल्यांकन'' :**

इस अध्याय के अंतर्गत चरित्र-चित्रण की अलग-अलग प्रवृत्तियों को प्रस्तुत किया है। इसके अंतर्गत ऐतिहासिकता का निर्वाह, स्थल काल का निर्वाह, दोनों महात्मा के रूप में, दोनों विचारवंत के रूप में, दोनों अधिकार की लड़ाई लड़नेवाले, दोनों स्थापित व्यवस्था में परिवर्तन चाहनेवाले रूप में, दोनों कवि के रूप में, दोनों क्रांतिकारी आदि रूपों में नजर आते हैं जिस पर विस्तृत रूप से विवेचन किया है। दोनों का समन्वित मूल्यांकन देकर साम्य-वैषम्य और अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

*** पंचम अध्याय - ''औपन्यासिक कला के आधार पर विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक मूल्यांकन'' :**

इस अध्याय के अंतर्गत 'सूत्रधार' तथा 'महात्मा' का कथाशिल्प, चरित्र

चित्रण शिल्प, संवाद शिल्प, देश-काल वातावरण शिल्प, भाषा शैली शिल्प, उद्देश्य शिल्प का विस्तृत विवेचन किया गया है। अध्याय के अंत में दोनों का तुलनात्मक मूल्यांकन, साम्य और वैषम्य दिए हैं। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष को दिया गया है। इसके उपरांत परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

❑ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. ''चरित्रप्रधान उपन्यास 'सूत्रधार' और 'महात्मा' का तुलनात्मक मूल्यांकन'' को केंद्रबिंदु बनाकर इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमत: ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में चरित्र-चित्रण की प्रवृत्तियाँ का सूक्ष्मता से अध्ययन कर विवेच्य उपन्यास के चरित्रों के इन प्रवृत्तियों का बारिकी से अध्ययन किया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में संजीव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।

* * * *

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितैषियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय के कुशल निर्देशन का फल है। आपने अपने अनेक व्यस्तताओं के होते हुए मेरी अनुसंधान की त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। आपके मौलिक विचारों से मैं हमेशा लाभान्वित हुई हूँ। आपका आदर्श, प्रसन्न एवं प्रभावी व्यक्तित्व मुझे हमेशा से प्रेरित करता रहा है। मैं आपके तथा आपके परिवार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ और कामना करती हूँ कि भविष्य में भी आपके आशीर्वचन और मार्गदर्शन सदैव प्राप्त हो।

हिंदी साहित्यकार **संजीव जी** की मैं सदैव आभारी रहूँगी। आप ने अपनी व्यस्तता के बावजूद वक्त निकालकर जो सहयोग दिया है, उससे मुझे मेरे अनुसंधान कार्य में मौलिकता लाने में मदद हुई है। साथ में मराठी साहित्यकार **डॉ. रवींद्र ठाकुर जी** की मैं सदैव ऋणी रहूँगी जिन्होंने हर बार अपनी व्यस्तता में भी मुझे समय देकर मेरी जिज्ञासाओं को तुष्ट किया। अत: मैं आपकी सदैव ऋणी रहूँगी।

मेरे माता-पिता के ऋणों को व्यक्त करना कठिन है। जीवन की हर राह में सही दिशा इंगित करनेवाले, मेरे प्रेरणास्थान मेरे आदरणीय एवं **पूजनीय माता-पिता** के आशीर्वाद के कारण ही मैं यह राह तय कर सकी हूँ। उनका स्नेह, आशीर्वाद सदैव मुझ पर बना रहें यही मैं ईश्वर से कामना करती हूँ। साथ में **स्वप्निल, सुप्रिया** की प्रेरणा भी महत्त्वपूर्ण रही, अत: मैं उनकी भी आजीवन ऋणी रहूँगी। साथ में मेरे **मामा-मामीजी** एवं मेरे **चाचाजी** इनकी प्रेरणा भी रही।

मेरे आदरणीय **श्वसुरजी** एवं **सासुमाँ** की प्रेरणा एवं आशीर्वाद भी मेरे साथ रहें। अत: उनकी भी मैं आजीवन ऋणी रहूँगी। साथ में ससुराल के बाकी लोगों की प्रेरणा भी महत्त्वपूर्ण रही। मेरे पति **श्री. चंद्रकांत वडवळेकर** जी की प्रेरणा भी महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी रही, अत: मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी।

आदरणीय **डॉ. शोभा निंबालकर, डॉ. आशा मणियार, डॉ. शाहजहान मणेर, डॉ. भाऊसाहेब नवले, डॉ. सुलोचना अंतरेड्डी, डॉ. भारती शेलके, डॉ. प्रकाश मोकाशी** आदि का मार्गदर्शन मिला, अत: मैं इनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ। मेरे शुभाकांक्षी और मेरी सहेलियों में **कु. वैशाली जाधव, कु. पुनम देशपांडे, कु. सुवर्णा गावडे, कु. स्मिता चव्हाण, कु. रूपाली जंगम** तथा मेरे मित्र **मालोजी जगताप, सतिश रुपनर, शरद पवार, वालचंद नागरगोजे, दीपक तुपे, युवराज मुलये, अजित लिपारे** का भी इस लघु शोध-प्रबंध कार्य की पूर्ति के लिए सहयोग प्राप्त हुआ। अत: इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे **बै. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर** से हुई। अत: इन **ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों** का और हिंदी विभाग के सहायक अधिक्षक **डॉ. मंगेश कोलेकर** का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है। अत: मैं इन सबकी ऋणी रहूँगी।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकण करनेवाले **अक्षर टायपिंग** के संचालक **श्री. गिरिधर सावंत** और **सौ. पल्लवी सावंत** की भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई हैं उन सब के प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध - छात्रा

V.Kumbhar
26/12/2007

(सुश्री. वैशाली रामचंद्र कुंभार)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 26/12/2007